

ARCHAEOLOGY, HISTORY AND DISTINCTIVE FOLK
TRADITIONS OF RURAL AREA OF MURSHIDABAD,
WEST BENGAL

Price : Rs. 150/- only

প্রথম প্রকাশ : ১৫ আগস্ট, ২০১৭

প্রকাশক : অভিজিৎ রায়

গ্রন্থস্বত্ব : পাঁচখুপী হরিপদ গৌরীবালা কলেজ

প্রচ্ছদ : অভিজিৎ রায়

মুদ্রণ : আকাশ II ৫২/জি/১, ডলি আবাসন II বাবুপাড়া
গোরাবাজার II বহরমপুর II মুর্শিদাবাদ-৭৪২১০১
ফোন : ০৩৪৮২-২৫৬২৫৬ / ৯৪৩৪২৫৬৩৫৬
E-mail : aakaashpublishers@gmail.com

ISBN : 978-93-84383-70-1

বিনিময় মূল্য : ১৫০ টাকা

সূচি

- বাংলার টেরাকোটা বৈচিত্র ও কৃষ্ণ লীলা ॥ কমল বন্দ্যোপাধ্যায় ১৪
- ফতেসিং পরগণা ও ফতে হাড়ির বৃত্তান্ত ॥ পুলকেন্দু সিংহ ১৮
- মঙ্গলকাব্যে বড়এগ অঞ্চল ॥ বালকনাথ ভট্টাচার্য্য ২৫
- কর্ণসুবর্ণ ও তৎসংলগ্ন অঞ্চলে ধর্ম ও সাংস্কৃতিক পট পরিবর্তন একটি বিশ্লেষণ ॥
সোমা ঠাকুর ৩৩
- পাঁচখুপীর যাত্রাপথ ॥ শম্পা লাহা ৩৮
- পাঁচখুপীর সঙ একটি হারানো ঐতিহ্য ॥ ড. প্রিয়নাথ ঘোষ হাজারা ৪১
- শরীয়তি মতে মুসলিম বিবাহ ॥ আতাহার হোসেন ৪৫
- গাজন উৎসব ॥ অজিত কুমার লাহা ৪৯
- চড়ক মেলা ॥ মৌমিতা ধর ৫২
- ইতিবৃত্তে জজান ॥ প্রশান্ত কুমার দাস ৫৪
- ■ প্রাচীন ঐতিহ্য ও জনশ্রুতির কেন্দ্র - কুলি ॥ অভিজিৎ মণ্ডল ৫৭
- ইতিহাসের আলোকে মুর্শিদাবাদের রোগ-মহামারি : ব্রিটিশ জনস্বাস্থ্য নীতি ও দেশীয়
লোকবিশ্বাস ॥ অরিজিৎ কুণ্ড ৬২
- শশাঙ্কের আমলে বঙ্গশিল্প সংস্কৃতি ॥ পম্পি সিদ্ধান্ত ৬৯
- কতিপয় গ্রাম সমীক্ষা ৭১-৮১
- যোগীন্দ্রনাথ সরকার : জন্মসার্থশতবর্ষে পুনর্নব ॥ ড. কাকলী ধারা মণ্ডল ৮২
- চিন্তার রাজনীতি ॥ মিন্টু মণ্ডল ৯৫
- লেখক পরিচিতি ॥ ৯৯

প্রাচীন ঐতিহ্য ও জনশ্রুতির কেন্দ্র - কুলি

অভিজিৎ মণ্ডল

শহরতলির পার্শ্ববর্তী এক প্রাচীন গ্রাম বড়এগ থানার অন্তর্গত কুলিচৌরাস্তা। যেখানে রয়েছে ভারতীয় জি টি রোডের স্পর্শযুক্ত বাদশাহী রোড। যেটি মোড়গ্রাম হয়ে উত্তরবঙ্গে মিশেছে। তাই দক্ষিণবঙ্গ ও উত্তরবঙ্গের মধ্যস্থতা করছে এই গ্রাম। সেই বাদশাহী আমলের নজিরবিহীন দৃষ্টান্ত রয়েছে এই গ্রামের পথ, মাঠ, ঘাট, আলো, বাতাস, মন্দির, মসজিদ, প্রকৃতিকে ঘিরে। রয়েছে কোকিলের কূজন বসন্তের ভোরে, আজ ও কলকল শব্দে বয়ে চলে নদী-নালা-পুকুরের সলিলাবেগ। ধ্বনিত হয় গ্রাম্য পরিবেশের ঐতিহ্যের বাণী। শোনা যায় মানুষের ভীতিবিহ্বল আর্তনাদ। এ এক অজানা গ্রাম 'কুলি'। স্থানের গুরুত্ব প্রকাশ পায় তার নামের মধ্য দিয়ে। এই গ্রাম সম্পর্কে কয়েকটি প্রবাদ শ্রুত হয়। প্রথমত - সাধারণজ্ঞান ও পঠনের আভাসে জানা যায় যারা মস্তকবাহী অর্থাৎ মাথায় করে মাল-পত্র নিয়ে যাওয়া-আসা করে তাদের কুলী বলে। তাদের নামানুসারে কুলি হয়েছে। তবে বানানবিধি অনুসারে তা হয় 'কুলী'। দ্বিতীয়ত-নবাবী আমলের নবাব 'মুর্শিদকুলি খাঁ'র নামানুসারে এই গ্রামে নাম হয় কুলি। শোনা যায় মুর্শিদকুলি খাঁ তৎকালীন জমিদার 'কাজি আজফারুল হক' সাহেবের ঘনিষ্ঠ বন্ধু ছিলেন। সেই সুবাদে তার এই গ্রামে ছিল। তাই তাঁর নামের পরিসর বৃদ্ধি এবং চিরস্থায়ীত্বের জন্য এমন নামকরণ হয়। তবে যেহেতু বর্তমানে 'কুলি' এই বানানটি যুক্তিযুক্ত হয়েছে তাতে দ্বিতীয় প্রবাদটি অধিক প্রামাণ্যের দাবী রাখে। আবার আলী নেওয়াজ মল্লিকের বক্তব্যের ভিত্তিতে জানা যায় ডাঙ্কী নদীর উত্তর প্রান্তে পাহারের নীচে কিছু নিদর্শন ছিল যা তিনি চাম্বুষ প্রত্যক্ষ করেছেন। সেখানে ইঁটের ফলকে লেখা ছিল 'কলিঙ্গ'। যার থেকে কোলি-কুলি এরূপ হয়েছে বলে ধারণা। সেই ফলকটি হারিয়ে গেছে বলে জানান মল্লিক সাহেব। যাই হোক কুলি নামের এরূপ তাৎপর্য বিশেষ ঘটনার সাক্ষ্য বহন করছে বলে মনে হয়।

কুলি প্রথমে গ্রাম ছিল, সেখানে যোগাযোগের অসুবিধার জন্য কয়েকজন ব্যবসার সুবাদে প্রায় ১ কিমি দূরে বসতি ও ব্যবসা শুরু করেন, যার ফলে ১টি গ্রামের দুটি পৃথক দিক

IJ Impact Factor : 2.206

ISSN - 2395-5104

शब्दार्णव
Shabdarnav

An International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research

Year-5

Vol. 10, Part-II

July-December, 2019

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI
Assist. Professor, Shree Baikunth Nath Pawahari Sanskrit Mahavidyalay
Baikunthpur, Deoria

Executive Editors
Dr. Kumar Mritunjay Rakesh
Mr. Raghwendra Pandey

Published by
Samnvay Foundation
Mujaffarpur, Bihar

IIJ Impact Factor : 2.206

ISSN : 2395 - 5104

शब्दार्णव **Shabdarnav**

International Peer Reviewed Referred Journal of Multidisciplinary Research

Year 5

Vol. 10, Part-II

July-December, 2019

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief

DR. RAMKESHWAR MARI

Assist. Professor, Shree Baikunth Nath Pawahari Sanskrit Mahavidyalay
Baikunthpur, Deoria

Executive Editors

DR. KUMAR MRITUNJAY RAKESH

MR. RAGHWENDRA PANDEY

Published by

SAMNVAY FOUNDATION

Muiaffarnur, Bihar

◆ शिक्षणाधिगमप्रक्रियाविमर्शः सिद्धिनाथ झाः	144-148
◆ संस्कृत साहित्य के नाटकों में नायक की विशेषताएँ सुमन कुमारी	149-151
◆ नागार्जुन की कविताओं में सौंदर्य, यथार्थ और संघर्ष घनश्याम पाण्डेय	152-156
◆ शैक्षिकमूल्यांकनस्य अवधारणा डॉ० राकेश गौतम	157-162
◆ आधुनिक सन्दर्भ में पुरोडाशपाक की प्रासंगिकता सुकान्त आर्य	163-165
◆ प्रदीप-नागेश-मीमांसका-सांख्य-भर्तृहरिः-भोजः महाभाष्य सप्तवादाः विचारकैः ध्वनिः स्फोटस्वरूपे कथं उपन्यस्तः स्वस्वमतेन? डॉ० जगदीश प्रसाद जाटः	166-168
◆ उपनिषदों के विशेष परिप्रेक्ष्य में योगांग यम का विवेचन प्रवीण	169-176
◆ वाक्यस्वरूपविश्लेषणम् स्वीटी रानी	177-183
◆ व्याकरणदर्शनपरम्परासंवाहकं वाक्यपदीयं वेदार्थपरम्परा च नीतीश कुमारः	184-188
◆ स्वास्थ्य रक्षा दवे ध्रुव अश्विनभाई	189-191
◆ मानव एवं पर्यावरण का पारस्परिक संबंध : एक विवेचना श्वेता गौड़	192-193
◆ आनन्दवर्धनमम्मटयोर्निरूपितानां काव्यदोषाणां परिशीलनम् Dr. Gitanjali Nayak	194-197
◆ तात्पर्यलिंगानां परिचयः, विचारश्च डॉ० सत्यव्रत मिश्रः	198-199
◆ संस्कृत साहित्य के आदिकाव्य में नारी : एक विश्लेषण अभिलाषा पालीवाल	200-206
◆ आनन्दवर्द्धन के ध्वनि सिद्धान्त की व्याकरणमूलकता आशुतोष कुमार	207-210
◆ वास्तुशास्त्रे संस्कृतस्य योगदानम् अभिजित् मण्डलः	211-213
◆ रामकण्ठकृतसर्वतोभद्रविवरणे ज्ञानस्वरूपालोचनम् अरुणमसान्यालः	214-218
◆ शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से वर्तमान में योग की प्रासंगिकता आशा मीना	219-224
◆ संस्कृतसाहित्ये राघामाघवयोः वर्णनम् भोलेश्वरप्रधानः	225-229

भारतीय संस्कृतशास्त्रे न केवलं वेदाः अपितु उपवेदाः सन्ति। तेषूपवेदेषु स्थापत्यवेदोपवेदस्मृतः। स्थापत्यवेदान्तर्गतेषु वास्तु-शिल्प-चित्रविद्या वास्तुशास्त्रम् तथा शिल्पशास्त्रमिति संज्ञितम्। वास्तु शब्दात् वास्तूद्भूतम्। अतः सृष्टिषु यानि यानि द्रव्याणि प्रत्यक्षाणि तानि वास्तुशास्त्रे उपलब्धानि। अपि च धरेयं वस्त्वित्यभिधानेनाभिषिक्ता। न केवलम् मनुष्यगृहम्, देवतारभ्य सर्वेषां प्राणिनामावासो वास्त्वेत्याभिमन्यते। नगर-गृह-परिकल्पना-कारिगरिविद्या-स्थापत्य-चित्रशिल्प-मूर्तिनिर्माणं वास्तुविद्यासु संकलितम्। भरणं वास्त्वेति ऋग्वेदे अभिमन्त्रितः।

क्षिति-अप्-तेजः-मरुत्-व्योमिति पञ्चभूतेभ्यः वायवीय-वैदुतिक-चुम्बकीयशक्तिराविर्भवति; यया मनुष्याणां धनस्वास्थे भवतः। यतः एतेभ्यः पञ्चभूतेभ्यः मानवशरीरं जातं एवम् मृते भूतानि तथा प्राणवायुः निर्गत्य सूर्यो संगच्छति, अतः रविरेव विश्वशक्तिरिति निश्चिता। सूर्यरश्मौ विद्यते प्राणदायिनी शक्तिः। तदर्थं गृहनिर्माणे वास्तुशास्त्रस्य यथोचितं प्रयोगमानन्ददायकम् न्यायशास्त्रोक्तदिशा पार्थिवशरीरमस्माकम् अभिकर्षज्वलं तथा माध्याकर्षणशक्तिः पृथिवीशक्तेर्मूलम्। वायुमण्डलस्यान्तर्गतानां विभिन्नपदार्थानां प्रभावः पृथिव्याम् वर्तते। अतः गृहनिर्माणकाले भूमिपरीक्षा भवेन्मङ्गलम्-

“सुगन्धा ब्राह्मणी भूमि रक्तगन्धा तु क्षत्रिया।”

मधुगन्धा भवेद्दृश्या मद्यगन्धा च शुद्रिका॥”

मनुष्यवती भूमिः अर्थमिति कौटिल्यमतम्। तल्लाभरक्षणयोर्शास्त्रमर्थशास्त्रमिति तैर्भणितम्-

“मनुष्याणां वृत्तिरर्थः मनुष्यवती भूमिरित्यर्थः।”^२

तस्याः पृथिव्याः लाभपारनोपायः शास्त्रमर्थशास्त्रम्॥”

प्राचीनसमाजव्यवस्थासीद्राजव्यवस्था, तस्मिन् काले दुर्गनिर्माणे परिखानिर्माणे च वास्तुशास्त्रस्य योगत्वम् बहुलचर्चितम्। महामतिकौटिल्यः तद्ग्रन्थे आलनिर्माण-सरोवरनिर्माणविषये च दर्शयति गुरुत्वम्। चाणक्यस्तस्य धर्मस्तीयमिति तृतीयाधिकरणे गृहवास्तुविषये भणितम्- वास्तावष्टाङ्गुलिपरिमितं स्थानं त्रिपदपरिमितं स्थानम् अन्तरिका वा गृहोपयुक्ता।

गृहे गतागत्यार्थमानिद्वारम् करणीयम्, गृहस्योपरि वातायनमावश्यकम्; तेन किरणवायुप्रवाहो प्रविशतः। वृष्टिपीडा परिहारार्थं ‘वानलटी’ मृत्तिकानिर्मितं स्तूपविशेषम् वा अपरिहार्यम्। एतद्भिन्ने वास्तुस्थापने दण्डः सर्वदा प्रदेयः। वास्तुनिर्माणे यदि कस्यापि किमपि कष्टमनुभूयते यथा प्रणालीनिर्माणे अवस्करे च, तर्हि गृहस्वामी भवेद्दण्डितः। प्रथमसाहसदण्डस्तस्येति कौटिल्यः। प्रजानां सुखहिताय राजा बन्धं (जलाशयं) प्रस्तुत्य मत्स्य-प्लव-हरितपण्यद्रव्याण्युत्पादनार्थं विविधकर्माणि कारयति। वास्तुशास्त्रे जलस्यापि महत्त्वं वर्णितम् शास्त्रकारैः, अतः कौटिल्येनाप्युक्तम् राजा भूमिजलाधिपतुरितिः शास्त्रवचनम्। मनुसंहितायामेवोक्तम् राजर्षिमनुना- राज्यचालनार्थं प्रजापालनार्थं देशप्रतिरक्षार्थं दुर्गनिर्माणमावश्यकम्। भाग्यावसर-वास्तु-गुण-शिक्षेति पञ्चवास्तुशृङ्खला मन्यन्ते चैनिकदार्शिनिकाः। तेषु मतेषु वास्तु प्रभवति जीवभाग्यम्; सुसमये प्रतिकूलवास्तु क्षतिं न साधयति अपि च अनुकूलवास्त्वपि जीवनं करोति दुःसहमित् दुःसमये।

जल-वाय्वग्नि-पृथिव्याकाशमिश्रिते वास्तुशास्त्रे दिशः अधिकतरम् महत्त्वम् सूचयन्ति। वास्तुशास्त्रस्य दिशा षोडशकोटरगृहमुत्तमम्।

*अध्यापकः संस्कृतविभागः (SACT), पंचथुपी हरिपद गौरीवाला कलेज

PHILOSOPHY, RELIGION AND CULTURE IN ANCIENT AND MEDIEVAL INDIAN TRADITION

Edited by

Smt. Rubi Rana

Assistant Professor

Deptt. of Sanskrit, SCBC College, P.O & Dist. Murshidabad

Sri Gopal Acharya

Assistant Professor

Deptt. of Sanskrit, SCBC College, P.O & Dist. Murshidabad



S.C.B.C College
Lalbagh, Murshidabad

Published by
Debasish Bhattacharya
Sanskrit Pustak Bhandar
38, Bidhan Sarani, Kolkata-700 006

Copyright : S.C.B.C College, Lalbagh, MSD

ISBN 978-81-946676-5-0

1st Published
January 2021

Price Rs. 1000.00

Printed By
Abhinaba Mudrani
77/1 Simla Street, Kolkata-700 006

Content

1.	Prof. Dr. B.K Swain	1
2.	Dr. Anindya Bandyopadhyay	6
3.	Mr. Partha Sarathi Sil	17
4.	Dr. Somnath Sarkar	22
5.	Prof. Dr. Niranjana Jena	32
6.	Prof. Dr. Bithika Banik	50
7.	Mr. Biplab Kotal	71
8.	Dr. Aditi Bhattacharya	76
9.	Dr. Sandhya Sarkar	92
10.	Dr. Pralay Banerjee	103
11.	Goutam Bhar	110
12.	Biplab Bagdi	121
13.	Gobinda Das	137
14.	Asim Ruidas	150
15.	Sikha Sarkar Sikdar	168
16.	Sandip Mallick	179
17.	Dr. Sudev	198
18.	Dipankar Mondal	208
19.	Amal Kumar Kar	219
20.	Dr. Subhamoy Pahari	234
21.	Abhijit Mandal	242
22.	Dipankar Mishra	249
23.	Debojit Das	269
24.	Amit Sarkar	283
25.	Arghya Gupta	293

समाज-संस्कारे चैतन्यदेवस्य अवदानम्- नाममहिमा अभिजित् मण्डलः

संस्कृत-विभागः, राज्यसहायताप्राप्त-महाविद्यालयशिक्षकः,
पाँचथुपी-हरिपद-गौरीवाला-कलेज

शोधसारः

अद्यतः पञ्चशताधिकवत्सरात्प्राक् वङ्गदेशस्य नदीयामण्डलस्थ-
नवद्वीपनगरे प्रेमस्वरूपः श्रीमन्-महाप्रभु-श्रीगौरचन्द्ररजायताचतुर्दशशतके
प्रवाहमानानां धर्मपुरुषाणां मतिस्तरणार्थाय अवतारकल्प-
श्रीचैतन्यदेवस्याविर्भावः कल्प्यते। मध्ययुगीयरीतौ मानवानां
धर्मश्चातुर्वर्णकेन्द्रिकोऽपि ब्राह्मणवर्णस्योधिक-प्रभावरसीत्तदा सर्वधर्म
समन्वयार्थं श्रीगौरचन्द्रस्य नामसंकीर्तनेन प्रेमदानमतिमधुरभावः। प्रेम्ना
ईश्वरसेवा सहजतरा भवत्यतर्नाम माध्यमेन समाजस्य सर्वस्तरस्य नरनारीणां
धर्माचरणं महाप्रभुना प्रवर्तितम्। वेदादिशास्त्राणां यद् ज्ञानमुपनिषदां या पराविद्या
सम्यगनुभवनीया सा एव मध्ययुग् श्रीचैतन्येन नामस्वरूपमित्यभूत्। “जपात्
सिद्धिः” इति शास्त्रवचनम्, केवलं ‘नाम-जपं’ करणीयम्। किम नाम? “नम्”
धातुना सह घे-घञ् प्रत्ययद्वययोगेन “नामः” पदं भवति। नामनिति
नपुंसकलिङ्गशब्दस्य प्रथमैकवचनमपि “नाम”, अपि च नामाव्ययम्। अत्र “नम्”
धातुतः आगतः “नामः” “नमः” पर्यायवाचि, अन्यमपि ‘नाम’ शब्दस्य पूर्व
‘प्र’ उपसर्गयोगेन “प्रणामः” इति भवति, प्रकृष्टरूपेण नमस्कारः इति तद्भावः, न
केवलं नमः इति भावरपितु प्रकृष्टरूपेण नामकरणमिति सिद्धम्। कस्य नाम?

“हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।¹

कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा”

कलिकालावसरे श्रीहरिनाम-श्रीकृष्णनामैव करणीयः

“कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः।²

द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद् हरिकीर्तनात्”॥

ANCIENT INDIAN POLITY AND DEMOCRATIC SYSTEM OF MODERN INDIA : AN INTERFACE

A Three-days International Webinar Proceedings
(13th-15th August 2020)

Chief Editor
LOKESH MONDAL

Co-Editor
KOUSHIK ROY

THE DACCA STUDENTS' LIBRARY

No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means without prior permission from the author and publisher.

প্রকাশক :

শ্রীবিকাশ দত্ত, এম. কম. এল-এল-বি

৫/১, শ্যামাচরণ দে স্ট্রীট,

কলকাতা-৭০০ ০৭৩

daccastudent2015@gmail.com

First Edition : December, 2020

All right reserved by the Editor in chief

ISBN : 978-93-84054-38-0

www.daccastudentlibrary.com

মূল্য : ছয়শত টাকা মাত্র

মুদ্রণে :

আদ্যাশক্তি প্রিন্টার্স

৪, যোগীপাড়া লেন

কলকাতা-৭০০ ০০৬

Authors	Topic	Pages
মস্তেশ্বর বর্মণ	দূতপ্রণিধি : মনুসংহিতা ও কৌটিলীয় অর্থশাস্ত্র	309
নব কুমার রায়	রাজতন্ত্রের স্বরূপ বর্ণনায় অর্থশাস্ত্রের অবদান	317
পাপিয়া দাস	প্রাচীন ভারতের রাজনীতিতে ধর্মের স্থান এবং তার সাপেক্ষে বর্তমান ভারতে গণতন্ত্রের অবস্থান	322
প্রিয়া ঘোষ	কৌটিল্যের রাষ্ট্র ও রাজনীতির ধারণা : বর্তমান দৃশ্যকল্প	328
অমল কুমার কর	কালিদাসোত্তরকালের কাব্যে প্রতিফলিত রাজনীতি	339
Sutapa Hota	অমাত্যনিয়োগে আধুনিক ভারত ও অর্থশাস্ত্রের ভারত তুলনামূলক আলোচনা	346
অভিজিৎ মণ্ডল	রাজনৈতিক দোলাচলে গুপ্তচর নিয়োগ— প্রসঙ্গ মুদ্রারাক্ষস নাটক	352
সঞ্চিতা গোস্বামী	প্রাচীন ভারতীয় রাষ্ট্রব্যবস্থা এবং আধুনিক ভারতের গণতান্ত্রিক ব্যবস্থা : কৌটিল্যের অর্থশাস্ত্র নির্ভর সমীক্ষা	357
Arnab Bandyopadhyay	রাজনীতির আঙিনায় অক্ষসূক্ত	368
তাপস পাল	মনু ও কৌটিল্য এর দৃষ্টিতে প্রাচীন ভারতের রাষ্ট্রনীতি : একটি সমীক্ষা	373
সুপর্ণা মণ্ডল	কৌটিল্যের শাসনব্যবস্থায় সপ্তাঙ্গ নীতির প্রাসঙ্গিকতা	380
স্বাগতা ভট্টাচার্য	রামায়ণ মহাভারতের যুগে নারীর অবস্থান খণ্ডন করেছে কি পিতৃতান্ত্রিক সমাজের আধিপত্যকে?—একটি অন্বেষণঃ	385
ডঃ দীপ্তশ্রী সোম	উত্তর-ঔপনিবেশিক ভারতবর্ষের রাজনৈতিক বাতাবরণ ও সংস্কৃত নাটক	396
পাপিয়া বেরা	কালিদাসীয় সাহিত্যে রাষ্ট্রীয়ভাবনা	403
শিল্পা শীল	প্রাচীন ভারতবর্ষের ইতিহাসে রাজার গুণাবলী : একটি পর্যালোচনা	411
পিনাকী শঙ্কর পাণ্ডে	রাজার নিত্য কর্তব্য	419
বুদ্ধদেব দাস	‘কিরাতাজুনীয়ম’-এর নিরিখে দ্রৌপদীর রাজনৈতিক চেতনা	425
আরমান আলি সেখ	বৈদিক সাহিত্য ও নারীমহত্ব	432

রাজনৈতিক দোলাচলে গুপ্তচর নিয়োগ—

প্রসঙ্গ মুদ্রারাক্ষস নাটক

অভিজিৎ মণ্ডল

স্বাষ্ট সংস্কৃত বিভাগ

পাঁচখুপী হরিপদ গৌরীবালা কলেজ

ভারতের রাষ্ট্রনীতি বা রাজধর্ম সমাজধর্মেরই একটি অঙ্গ। সকল ধর্ম রাজধর্মের উপর নির্ভরশীল, তার কারণ হল— প্রাচীন কাল হোক বা আধুনিক কাল ব্যক্তিগত ধর্মের উদ্দেশ্য সমাজধর্ম ও রাষ্ট্রধর্ম বিদ্যমান। তাই সকল ধর্ম রাজধর্মের অর্থাৎ পরিচালকের নিয়ম, নীতি, পরম্পরার উপর ন্যস্ত থাকে। মহাভারতকার বলেছেন—“সর্বে ধর্মা রাজধর্মা প্রধানাঃ”। রাজাই রাজ্যের সর্বময় বিধাতা, কিন্তু রাজাকে মনে রাখতে হবে— প্রজাদের সুখেই রাজার সুখ, প্রজাদের কল্যাণেই রাজার কল্যাণ।^১ রাজা রাজ্যের মূল হলেও তাঁর একাধিক পক্ষে সব কাজ দেখা সম্ভব নয়। তাই সচিব, মন্ত্রী, চর প্রভৃতি রাজসহায়ক রাজার প্রয়োজন। রাজার অন্যতম সহায় যে চর তা গ্রন্থপ্রমাণেই সমুদ্রিত। তাই রাজাকে “চারচক্ষু” বলা হয়—

“গাবঃ পশ্যন্তি গন্ধেন বেদৈঃ পশ্যন্তি পণ্ডিতাঃ।

চারৈঃ পশ্যন্তি রাজানশ্চক্ষুর্ভ্যাম্ ইতরে জনাঃ”।। (২)

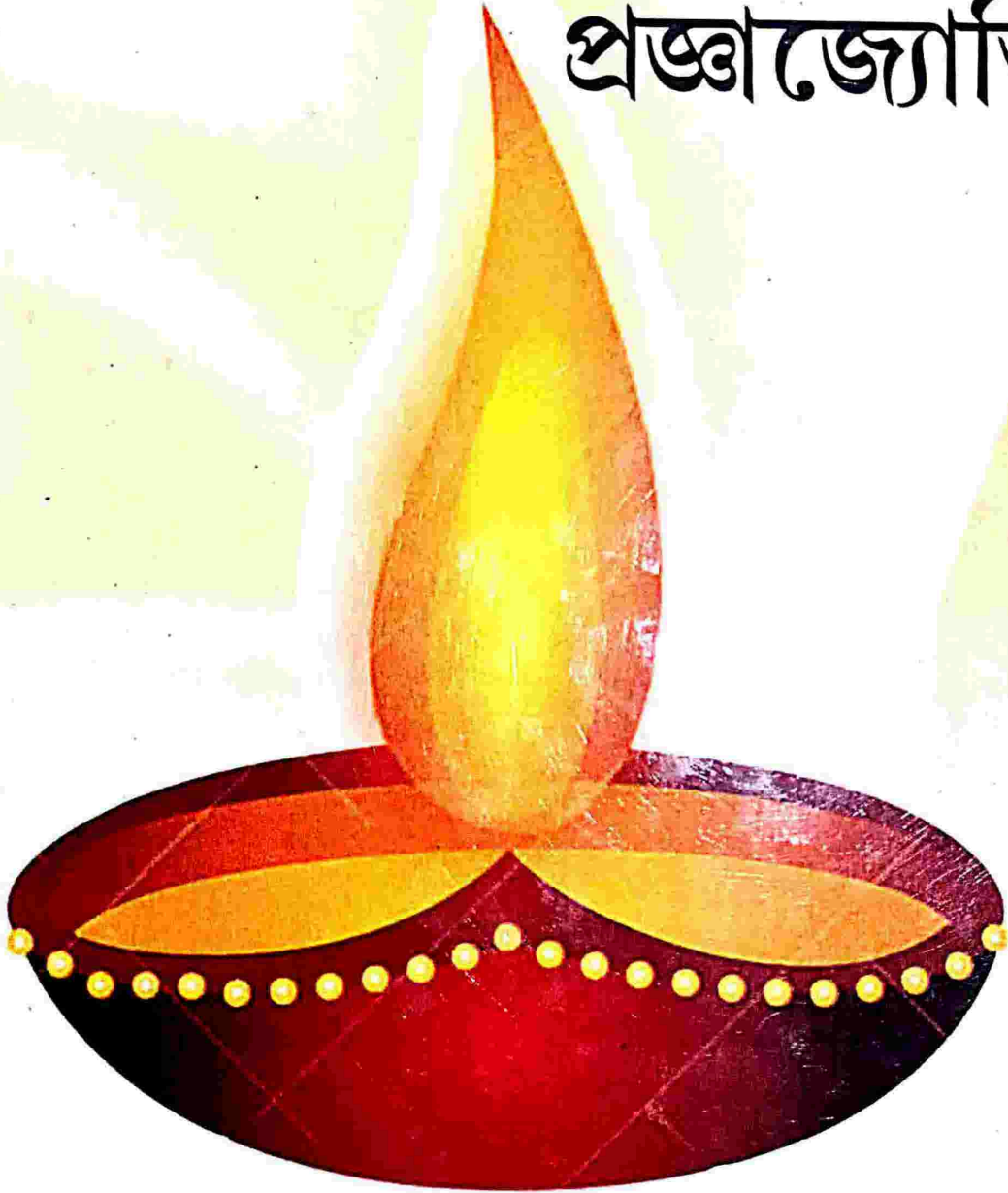
রাজনীতিতে কেউ চিরশত্রু থাকে না, রাজনৈতিক পন্থায় শত্রুও কখনো কখনো বন্ধু হয় আবার বন্ধুও ঘোর শত্রুরূপে সম্মুখে অবতীর্ণ হয়। মুদ্রারাক্ষস নাটক তার সমুদ্রবৎ প্রমাণ— “মিত্রাণি শত্রুত্বমুপানয়ন্তী মিত্রত্বমর্থস্যবশাচ্চ শত্রুন্”^(৩)। মুদ্রারাক্ষসে ভেদনীতির মূলে আছে কপট দুরভিসন্ধি। এই অভিসন্ধির দ্বারা নন্দবংশের একনিষ্ঠ সেবক তথা মন্ত্রী রাক্ষসকে চন্দ্রগুপ্তের মন্ত্রীপদে বসানো এবং মৌর্য পরম্পরার বিন্যাসে রাক্ষসের মতো মন্ত্রীকে আসনে ন্যস্ত করাই ছিল চাণক্যের মূল লক্ষ্য। তাই তিনি নিজ বিচক্ষণ বুদ্ধির দ্বারা রাক্ষসের সঙ্গে মলয়কেতুর বিচ্ছেদ ঘটাতে সচেষ্ট হন। যা তিনি করেছেন গুপ্তচরদের

১. প্রজাসুখে সুখং রাজঃ; প্রজানাঞ্চ হিতে হিতম্” (অ,শ,।) ২. নীতিবাক্যামৃত। ৩. মূ.রা.— ৫/৮।

Prajñājyotiḥ

प्रज्ञाज्योतिः

প্রজ্ঞাজ্যোতিঃ



Chief Editor

Lokesh Mondal

প্রকাশকঃ
শ্রীবিকাশ দত্ত, এম. কম. এল-এল-বি
৫/১, শ্যামাচরণ দে স্ট্রীট,
কলকাতা-৭০০ ০৭৩
daccastudent2015@gmail.com

Second Edition : June, 2018
Third Edition : December, 2020

All right reserved by the Editor

ISBN : 978-93-84054-17-5
www.daccastudentlibrary.com

মূল্য : পাঁচশত টাকা মাত্র

মুদ্রণেঃ
আদ্যাশক্তি প্রিন্টার্স
৪, যোগীপাড়া লেন
কলকাতা- ৭০০ ০০৬

Contents

Author	Topic	Page
Swarnali Chandra	"SUBHASITA VERSES AND STATEMENT REFLECTED IN THE PLAY 'YAYATICHARITAM' COMPOSED BY PRATAPARUDRADEVA"	17
Dr. Somnath Das, Anirban Chakraborty, Jubin Yasmin	Humanism in Indian Education in the light of Sanskrit Literature : A Survey	29
ARMAN ALI SHAIKH	The problem of accepting God in classical Sāmkhya :	34
EVANANAJNIN	Values in the <i>Vedic</i> Education	37
Rinku Mandal	Social status of Dalit, Shudra and Women : in the light of Manusmriti.	43
Buddhadev Das	Ahalya the Significant one	53
Pradip Karmakar	Role of Dalits in Indian National Movement: A focus on Ambedkar's Thought	60
Ganesh Let	The Nature of Rgvedic Rites : A Fresh Study	69
चन्दनदासः	ईशोपनिषद् दृष्ट्या आत्मतत्त्वनिरूपणम्	79
देवव्रतसाउ	वर्तमानप्रेक्षापटे न्यायवैशेषिकदर्शनयोः प्रासङ्गिकत्वम्	87
सौरभदे	श्रीमद्भगवद्गीतायामलङ्कारविर्मशः	92
अर्पितामैत्रा	बोधार्थिनी गौड़वङ्गविश्वविद्यालय	98
अभिजितराय	अग्निपुराणे प्रपञ्चितानां काव्यशास्त्रीयतत्त्वानां समीक्षणम्	103
सत्येन्द्रनाथआदकः	वेदेषु धर्मनिरपेक्षता	112
अशोकमण्डलः	शिवराजविजये प्रकृतिचित्रणम्	118
भास्करच्याटाज्जी	अर्वाचीनसंस्कृतवाङ्मये राजनैतिकसमस्याधारितरूपकाणाम् अन्वेषणम्	125
सुतपामण्डल	कालिदासीयसाहित्ये सङ्गीतचर्चा : एका समीक्षा	133
देवसुजन-मुखार्जी	आधुनिकसंस्कृतकवेः श्रीजीवन्यायतीर्थस्य रूपकेषु अद्भुतरसप्रयोगवैचित्र्यम्	144
अभिजित मण्डलः	हाइकुकाव्ये कविहर्षदेवमाधवस्य दार्शनिकतत्त्वसमीक्षणम्	150

हाइकुकाव्ये कविहर्षदेवमाधवस्य दार्शनिकतत्त्वसमीक्षणम्

अभिजितमण्डलः

स्याक्ट (SACT)

पाँचथुपी हरिपद गौरीवाला कलेज

निखिलसंस्कृतसाहित्यसंसारे अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यं पूर्वापरगौरवमवलम्ब्यप्रचलति । तत्र गुर्जरप्रदेशीय-श्रीहर्षदेवमाधवः जापानदेशीय-काव्यशैलीमनुसृत्य संस्कृतसाहित्ये त्रिचरणात्मकं विल्वपत्रं शिल्पसम्मतं रचयति । त्रिचरणात्मके पद्ये कवेः साहित्यविलासः तथा दार्शनिकतायाः उद्भासो स्वतः एव सन्दृश्यते ।

कविपरिचयः १९५४ ईशवीयाब्दे अक्टोबरमासस्य विंशतिदिवसे गुर्जरप्रदेशे कविवरोऽयम् समजनि । श्रीमनसुखलालः एव तस्य पितासीत् । १९८९ अब्दे अहमदाबादतः स्नातकोत्तरपरीक्षायाम् प्रथम श्रेण्यामुत्तीर्णासीत् । कविवरोऽयम् जापानदेशतः हाइकुः, कोरियातः सीजो, वङ्गदेशतः वाउलगीतस्य प्रयोगकर्तृषु प्रथमः आसीत् । तस्य गुर्जर-संस्कृत-हिन्दि-बहुविधाः रचनाः सन्ति । तासु रचनासु “तव स्पर्शे स्पर्शे” इति काव्यग्रन्थस्य कृते ‘साहित्य अकादेमि’ पुरष्कारेण भूषितोऽभवत् । “निष्क्रान्ताः सर्वे” इति काव्यं रचयित्वा कालिदास-पुरष्कारेण सम्मानितोऽभवत् ।

हाइकुकाव्यम् : हाइकु इति क्षुद्रं काव्यं जापानदेशे मध्ययुगे तान्का-नामक-काव्यात् प्रादर्भूतोऽभवत् । तत्र जापानदेशे नववर्षारम्भे एतेषां काव्यानां सृजनं कविमुखेभ्यरजायत इति ज्ञायते-

“It is a tiny verse form in which Japanese poets have been working for hundreds of years. Originally it was the first part of Tanka, a five-line poem often written by two peoples as a literary game. One writing three lines, the other two lines, capping them. But the Hokku,

HUMANISM IN INDIAN EDUCATION

(Peer Reviewed)
(Proceedings of the International Seminar)



Chief Editor
Prof. (Dr.) Swagata Das Mohanta
Hon'ble Principal,
Chakdaha College, West Bengal, India

Editor
Dr. Shiladitya Satpathi
Assistant Professor
Department of Sanskrit, Chakdaha College, West Bengal



Chakdaha College

(Affiliated to the University of Kalyani)

Estd: 1972  Govt. Sponsored  Re-accredited by NAAC 'B+'
Chakdaha, Nadia, West Bengal, India

2020

Humanism in Indian Education
(Proceedings of the International Seminar)
(Peer - Reviewed)

© Chakdaha College

ISBN: 978-93-82399-69-8

Published by: **The Principal, Chakdaha College,**
P.O. - Chakdaha, Dist- Nadia, West Bengal, Pin-741222

Published: November, 2020

Printed at: Dove Publishing House
9/4, Tamer Lane, College Street, Kolkata- 700009

Price: ₹ 700/-



Chakdaha College
(Affiliated to the University of Kalyani)
Estd: 1972 ☞ Govt. Sponsored
☞ Re-accredited by NAAC 'B+'
Chakdaha, Nadia, West Bengal, India

N. B. All views and opinions expressed in the paper are the sole responsibility for the author concerned, neither the Editor or nor the publisher can in any-way, be held responsible for them.

अभिज्ञानशकुन्तलमिति नाटके मानविकमूल्यबोधः ➤ Debojit Das	104
महाकवेः कालिदासस्य गीतिकाव्येषु मानवधर्मतत्त्वानि ➤ Tarun Kumar Samanta	114
वैदिकसूक्तेषु मानवतावादः ➤ Dibbyendu Roy	119
संस्कृत-वाङ्मये मानवशिक्षा ➤ Avijit Mondal	124
<hr/>	
श्रीमद्भगवद्गीतायां मानवतावादः ➤ Susmita De	129
प्राचीनशिक्षाव्यवस्थायां मूल्यबोधस्तथा साम्प्रतं शिक्षाव्यवस्थायां तदवक्षयस्य खण्डचित्राङ्कनम् ➤ Mousumi Roy	135
उपनिषत्सु मानवतावादः ➤ Riya Dutta	139
औपनिषदिकी मानवतावादशिक्षा ➤ Shrabani Kundu	144
चित्तशुद्धिसाधने ईशोपनिषद् ➤ Moumita Khanra	148
भासविरचिते प्रतिमा इति नाटके वर्णितो मानवधर्मः ➤ Uttam Kumar Bera	153
भारतीयशिक्षा मानवतावादश्च ➤ Shyam Sundar Sadhukhan	157

संस्कृत-वाङ्मये मानवशिक्षा

अभिजित् मण्डलः

SACT,

पाँचथुपी हरिपद गौरीवाला कलेज, पश्चिमवङ्गः ।

शोधसारः

“अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्”॥

शिक्षेयं संस्कृतोक्तदिशा जगति प्रतिष्ठिता। भारतीय-प्राचीना-शिक्षासु वसुधैव कुटुम्बकम्। तत्र न कोऽपि आत्मनः परस्य वा। सर्वैवात्मवत् मन्यन्ते। अनया धारणया यद् ज्ञानं प्रतिष्ठितं तदेव मानवताबोधः एवोच्यते। मानवजीवनस्य नीतिगतबोधः एव मानवताबोधः। बुध् धातोर्वोधः जायते, तद् ज्ञानमिति विद्वांसः। भारतीयाः खलु वैदिकशिक्षातः शिक्षितवन्तः। तेषु ऋषिशिक्षा विद्यमाना। ते जानन्ति भोगेन सुखं नास्ति वरं त्यागेन सुखमनुभवति। “आचारो परमो धर्मः” इति शास्त्रवचनम्, आचारः सदाचारः सद्व्यवहारः। सर्वदा सर्वान् प्रति श्रद्धाज्ञापनमाचारः इति धर्मस्य निदानम्। आचार्य-याज्ञवल्क्येनोक्तम्-

“श्रुतिस्मृतिसदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।

सम्यकसङ्कल्पजः कामो धर्ममूलमिदं स्मृतम्”॥ (या.सं)

‘सदाचारः’ एवं मानवचरित्राणां वैशिष्ट्यम्। वेदादिशास्त्रज्ञानैः न सर्वं सिद्ध्यति सदाचारेण जीवनं सुखमयं भवति। अभिज्ञानशकुन्तलम् नाटकतः अपि प्राचीना शिक्षा अस्माभिः स्मरणीया –

आपरितोषाद् विदूषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञनम्।

वलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ॥ (अ.श 2/1-)

प्राथम्यमात्मकौशलमोचितं न चिन्तनीयम्। शिक्षितानामानन्दवशादेव तद् यथार्थं भवति। अपि च कठिनास्त्रेण जीवहननं कदापि न करणीयम्, समाजस्य कृते इयं शिक्षा मानवताबोधस्य प्रेरणास्ति – “न खलु न खलु वाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन् मृदुनि मृगशरीरे तुलाराशाविवग्निः”।

तैत्तिरीयपनिषद्-शिक्षा दैनन्दिनि काले अनुकरणीया – मातृदेवो भव पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव। यतः माता-पिता-आचार्यः अस्माकं जीवनस्य सर्वोच्चाश्रयस्थानम्, ततः तेषाम इयं वाणी सर्वेषां माननीया पालनीया चापरिवेशरक्षणाय समाजपालनाय च ऋग्वेदस्य दशममण्डलान्तर्गतस्य संज्ञानसूक्तस्य मन्त्राणां महत्तम स्वीकरणीयम्। येषां मन्त्राणामुत्कृष्टा शिक्षा वर्तमाने गुरुत्वपूर्णा – “सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वे मनांसि जानताम्.....”।

“समानी वः आकुतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति”॥ (ऋ.सं 4/191/10-)

कूटशब्दाः – मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, समाना हृदयानि वः।

उपोद्घातः

“अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।